आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी
(बुद्ध पूर्णिमा - ई २०१३)

१) 'कूटस्थ' क्या है या कूटस्थ किसे कहते है ? यह कूटस्थ कहाँ अवस्थित है?

उत्तर: कूटस्थ हुआ सर्वव्यापी विराट् मन। 'कूट' का अर्थ है अंत:पुर और 'स्थ' का अर्थ है अस्थि; अर्थात अंत:पुर में जिसका वास है वही हुए जीवात्मा या आत्माराम। कूटस्थ हुआ विश्वयोनि जहाँ विश्व का उद्भव होता है। आज्ञाचक्र के मध्यभाग के केन्द्र में त्रिकूटी के मध्य कूटस्थ का स्थान है। योगीगणों को कूटस्थ मध्य सर्वव्यापी चेतना की उपलब्धि होती है।

२) कुलकुण्डलिनी कहाँ अवस्थान करती है? यह कुलकुण्डलिनी शक्ति कब मूलाधार चक्र पर अनुभूत होती है? कुलकुण्डलिनी किसे कहते हैं?

उत्तर: शाक्त सहस्रार के केन्द्र-स्थल में त्रिकोणाकार योनिमण्डल में स्वयंभूलिंग को वेष्टित कर साढ़े तीन बलयों में लपेट कर कुलकुण्डलिनी सर्पाकार रूप में अवस्थित है। दीक्षाकाल में सद्गुरु त्रिकूटी पर शक्तिपात कर ऊर्ध्वशक्ति को अधोगामी कर योनिमण्डल समेत कुलकुण्डलिनी शक्ति को मूलाधार चक्र पर उत्थापित कर चैतन्यदान करते हैं। मूलाधार में क्षिति तत्त्व – यही से मानव चेतना का क्रम-विकास आरंभ होता है। सद्गुरु द्वारा कुलकुण्डलिनी शक्ति को जागृत कर देने पर परवर्ती काल में योगसाधन करने के समय उसे अनुभूति द्वारा अनुभव किया जाता है।

स्वयंभू लिंग को साढ़े तीन वलयों में वेष्टित कर जो वायवीय कुण्डलिनी शक्ति जड़ अवस्था में रहती है, वह जब हृदयस्थित आत्मशक्ति के साथ संयुक्त होकर चैतन्यमय हो उठती है, तभी उसे कुलकुण्डलिनी कहते हैं। 'कुल' का अर्थ है आदि अवस्था या वंश; आत्मा हुआ ब्रह्मवंश का ब्रह्माणु इसी लिए आत्मा ही 'कुल' नाम से अभिहित है।

३) इस ब्रह्मांड में नित्य वस्तु क्या है?

उत्तर: चैतन्य-शक्तिमयी अक्षर रूपी बीज एवम् प्राण।

४) (क)प्राणायाम क्या है? (ख) प्राणायाम के तीन प्रभाग – पूरक-कुंभक-रेचक का विशेष महात्म्य क्या है? (ग) प्राण क्या है?

उत्तर: (क) प्राण के सम्यक रूपेण विस्तार या संवर्धन के अनुशीलन को प्राणायाम कहते हैं; अर्थात देहाभ्यंतरस्थ चैतन्य शक्ति का उन्मेष और विस्तार।

(ख) प्राण को महाप्राण के साथ योगयुक्त करना ही प्राणायाम है। प्राणायाम के तीन प्रभाग हैं – 'पूरक, कुंभक, रेचक'। पूरक में शक्ति संचारित होती है, कुंभक में शक्ति संचित होती है शक्ति को संचालित करने का अधिकार प्राप्त होता है, रेचक में शक्ति का प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त होता है। प्राणायाम के फलस्वरूप प्राणाराम तक पहुँचा जाता है।

(ग) चैतन्य शक्ति का वायवीय प्रवाह हुआ 'प्राण' – प्राण की दो अवस्थाएं हैं – चंचल प्राण जिसे मन कहते है एवं स्थिर प्राण हुआ आत्मा।

५) योनिमुद्रा साधन का महात्म्य क्या है? 'योनिमुद्रा' क्यों कहा जाता है? 'मुद्रा' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर: योनिमुद्रा साधन की सहायता से कूटस्थ में प्रवेश का अधिकार प्राप्त होता है। कूटस्थ में प्राण की स्थिति से विश्व का रूप दर्शन होता है। कूटस्थ हुआ विश्वयोनि, इसी कारण इसका नाम योनिमुद्रा हुआ। योनिमुद्रा द्वारा कुंभकसिद्ध हुआ जा सकता है। कुंभकसिद्ध अवस्था में साधक केवली अवस्था प्राप्त करता है। इच्छामात्र से ही विश्व के रूप दर्शन का अधिकारी बन जाता है। योनिमुद्रा को शाम्भवीमुद्रा भी कहते है। योनिमुद्रा साधन के फलस्वरूप शाम्भवी शक्ति जागृत होती है। शाम्भवी शक्ति हुई शिव-भाव की मंगलमयी शक्ति अर्थात हितकर शक्ति। साधक के मध्य इस शक्ति के जागरण से वे सर्वावस्था में मंगलपूर्ण आचरण करते हैं एवं उनके व्यक्तिगत क्षेत्र में भी मंगल होता हैं अर्थात वे परम मंगलमय की नित्य कृपा लाभ करने में समर्थ होते हैं।

'मुद्रा' शब्द का अर्थ है ''महाआनन्द प्रदाता''। योनिमुद्रा साधन में ज्योतिदर्शन से साधक अभूतपूर्व आनन्दलाभ करते हैं।